International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में ई-बैंकिंग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. ज्योति कपूर भार्गव[1], तारा सांखला[2]

[1]प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर
[2]शोधार्थी (अर्थशास्त्र), महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

सारांश:

भारत में बैंकिंग प्रणाली देश के आर्थिक विकास का आधार स्तंभ बनती जा रही है। प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ लोगों की जरूरतो को देखते हुए पिछले कुछ वर्षों में बैंकिंग प्रणाली और प्रबंधन में अत्यधिक परिवर्तन देखे गए हैं। वर्तमान समय में बैंकिंग उद्योग वित्तीय क्षेत्र के सबसे आवश्यक वित्तीय स्तंभों में से एक है और यह अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए महत्वपूर्ण है। परिणाम स्वरुप किसी देश की प्रगति का बैंकिंग के विकास से अटूट संबंध है। बैंकिंग प्रणाली में दी जाने वाली ई-बैंकिंग सुविधाओं के द्वारा बहुत ही कम समय में महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है। ई.बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक अपने खाते तक पहुंच सकता है और कंप्यूटर या मोबाइल फोन का उपयोग करके कई लेन-देन संबंधित कार्य भी कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में सार्वजनिक बैंक (बैंक ऑफ़ बड़ोदा) और निजी बैंक (एचडीएफसी) का एक निश्चित अवधि के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द:- बैंकिंग, ई-बैंकिंग, बैंक ऑफ़ बड़ोदा, एचडीएफसी बैंक।

प्र

स्तावना:-

भारत में बैंकिंग प्रणाली देश के आर्थिक ढांचे की आधारशिला है। भारत में बैंकिंग प्रणाली कई दशकों में विकसित हुई है तथा यह अर्थव्यवस्था की विभिन्न ऋण और बैंकिंग आवश्यकताओं को भी पूरा करती है। बैंकिंग प्रणाली देश के आर्थिक विकास को गति प्रदान करती हैं तथा विभिन्न ग्राहकों और उधारकर्ताओं की विशिष्ट और विविध वित्तीय आवश्यकताओं को सुविधाजनक बनाकर देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग, बैंकिंग का ही एक रूप है जिसमें नगद, चेक या अन्य प्रकार के कागजी दस्तावेजों के प्रत्यक्ष आदान-प्रदान के बजाय, इलेक्ट्रॉनिक संकेतों के आदान-प्रदान के माध्यम से धन हस्तांतरित किया जाता है। जब भी कोई स्वचालित टेलर मशीन (ATM) से नगद निकालता है या डेबिट कार्ड का उपयोग करके भुगतान करता है तो धन इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग के माध्यम से स्थानांतरित किया जाता है। यही ई.-बैंकिंग का एक स्वरूप है। ई.बैंकिंग या नेट बैंकिंग, फंड ट्रांसफर से लेकर डिमांड ड्राफ्ट प्राप्त करने तक सभी बैंकिंग कार्यों को आसान बनाता हैं। इसी प्रकार ई.बैंकिंग के अंतर्गत **NEFT, RTGS** और **IMPS** आदि के द्वारा भी इंटरनेट के माध्यम से एक खाते से दूसरे खाते में फंड ट्रांसफर किया जा सकता हैं।

साहित्य समीक्षा:- .

जमालुद्दीन एन.(2013) ने अपने प्रकाशित **लेख "E-Banking: Challenges and Opportunities in India"** में उन्होंने बताया कि 1969 में राष्ट्रीयकरण के समय भारतीय बैंकिंग प्रणाली प्रारंभ में घरेलू रूप से उन्मुख थी। उन्होंने अपने लेख में बताया कि भारतीय बैंकिंग में प्रौद्योगिकी, बैंक ऑफिस ऑटोमेशन के दिनों से लेकर आज के ऑनलाइन, केंद्रीकृत और एकीकृत समाधानों तक काफी विकसित हुई है। उन्होंने बताया कि तकनीकी वृद्धि से ATM, INTERNET, MOBILE और PHONE बैंकिंग सेवाओं में काफी वृद्धि हुई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि बैंकिंग क्षेत्र में तकनीकी प्रौद्योगिकी का अत्यधिक उपयोग वित्तीय प्रणाली समिति (नरसिंह समिति, 1991) की सिफारिश के बाद प्रारंभ हुआ, जिन्हें 1991 में लागू किया गया था । अत: उन्होंने अपने लेख में निजी और विदेशी बैंकों द्वारा नई तकनीक के माध्यम से दी जाने वाले सेवाओं पर प्रकाश डाला है।

गौतम लीलेश (2014) द्वारा प्रकाशित लेख **" E-Banking in India: Issues and Challenge"** में उन्होंने बताया कि इंटरनेट बैंकिंग एक ऐसी सेवा है जो ग्राहकों को किसी भी समय बैंकों की वेबसाइट पर इंटरनेट कनेक्शन के साथ वेब सक्षम कंप्यूटरों से अपने बैंक खातों पर वित्तीय लेन-देन करने की अनुमति देती है। उनका यह लेख ई-बैंकिंग उद्योग के विकास में प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों के बारे में एक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अत: उन्होंने निष्कर्ष रूप में बताया कि भारत में बैंकिंग के अनुप्रयोग से उनके स्थानीय बैंकों को परिचालन लागत कम करने और अपने ग्राहकों को बेहतर और तेज सेवा प्रदान करने में मदद मिल सकती हैं।

धनंजय बी.(2015) द्वारा प्रकाशित शोध लेख **" The Electronic Banking Revolution in India"** में उन्होंने बताया कि विभिन्न देशों में खुदरा इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली में प्रगति हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि रिजर्व बैंक ने अपने विजन स्टेटमेंट में कम नगदी समाज की दिशा में इलेक्ट्रॉनिक भुगतान को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने के लिए उद्देश्य निर्धारित किया है। उन्होंने अपने लेख में बताया कि वर्ष 2009 में भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI)के गठन में खुदरा इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के विकास के लिए एक

मंच तैयार किया गया जो कैशलेस और कम नगदी समाज की ओर बढ़ने का एक बड़ा अवसर प्रदान करता है। इसके लिए उन्होंने टी-परीक्षण का प्रयोग भी किया। निष्कर्ष रूप में उन्होंने बताया कि खुदरा इलेक्ट्रॉनिक समाशोधन के अनुपात में व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण भुगतान जैसे RTGS (Real Time Gross Settlement) और CCIL (Clearing Corporation of India Limited) वर्ष 2005-06 में 1 % से बढ़कर वर्ष 2013-14 में 3% होने से बैंकिंग क्षेत्र बहुत अधिक विकसित हुआ हैं।

राय एम. एन. (2015) ने अपने प्रकाशित शोध **"Impact of Mobile Banking on its users and banking"** में उन्होंने बताया कि मोबाइल बैंकिंग, मोबाइल डिवाइस के माध्यम से वित्तीय लेन-देन संचालित करने के लिए उपयोगी है। यह वित्तीय लेन-देन, मोबाइल उपभोक्ता और वित्तीय संस्थान के मध्य होता है। उन्होंने यह भी बताया कि मोबाइल बैंकिंग, मोबाइल डिवाइस के उपयोग या सेवाओं के भुगतान के लिए और बिक्री के स्थान पर EFTPOS (Electronic Funds Transfer at Point of Sale) भुगतान को प्रभावित करने के लिए डेबिट या क्रेडिट कार्ड के उपयोग के अनुरूप है।

राज के. बी. (2023) ने अपने प्रकाशित लेख **"A Study on Awareness of E-Banking Services Among Rural Customers in India"** में उन्होंने बताया कि भारत में ग्रामीण ग्राहकों के बीच ई-बैंकिंग सेवा अपनाने में काफी वृद्धि हुई है। उन्होंने अपने लेख में जन-धन योजना के बारे में भी बताते हुए कहा कि यह एक सरकारी योजना है जिसका उद्देश्य भारत में परिवारों को बैंक खाता प्रदान करना है। उन्होंने अपने लेख में बताया कि वित्तीय संस्थानों और नीति निर्माताओं ने वित्तीय साक्षरता और डिजिटल जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए भी सहयोग किया है, जिससे ग्रामीण ग्राहकों को सुरक्षित और प्रभावी ढंग से ई-बैंकिंग अपनाने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है।

चावला एस.(2024) ने अपने प्रकाशित लेख **"Exploring The Potential of Online Banking: An Insight Into Innovations and Barriers In The Indian Context"** में उन्होंने बताया कि आज के डिजिटल नवाचारों के आगमन के साथ बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों के ग्राहक इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से बैंक की वेबसाइट पर कई तरह की वित्तीय गतिविधिया कर सकते हैं जिसे ई-बैंकिंग या वर्चुअल बैंकिंग भी कहा जाता है। उन्होंने बताया कि भारतीय बैंकिंग प्रणाली में, 1990 के दशक में नवाचार और प्रौद्योगिकी ने अधिक ध्यान आकर्षित किया है। बैंकों ने उच्च-गुणवत्ता वाली सेवाएं अधिक तेजी से देने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना भी शुरू कर दिया है। अत: उन्होंने इंटरनेट बैंकिंग के बारे में बताते हुए स्पष्ट किया कि इंटरनेट बैंकिंग का लोगों के दैनिक जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। मोबाइल और इंटरनेट बैंकिंग की सुविधा के कारण ग्राहक अब कहीं से भी बैंकिंग कर सकते है। अत: उनके लेख से स्पष्ट है कि बैंकिंग उद्योग पर सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगति का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा है।

सरस्वती एस. (2024) ने अपने प्रकाशित लेख **" A Study of E-Banking Services in Public Sector Banks in India"**

में उन्होंने बताया कि भारत में बैंकर सुरक्षित और उचित लेन-देन सेवाओं के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आसान सेवाएं प्रदान करते हैं। इस प्रकार उन्होंने अपने शोध पत्र में ई - बैंकिंग के तीन आयाम / कारकों का विश्लेषण किया है:- 1) पहुंच, 2) सुविधा और सुरक्षा, तथा 3) ग्राहक संतुष्टि पर इन कारकों का प्रभाव। उनका यह अध्ययन हरियाणा के पलवल जिले के आसपास के 165 उत्तरदाताओं से एक संरचित प्रश्नावली के साथ एकत्रित किए गए प्राथमिक और द्वितीयक डाटा पर आधारित है। अत: उन्होंने अपने लेख में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और उत्तरदाताओं का चयन सुविधा नमूनाकरण विधि के मानदंडों का उपयोग करके किया।

अध्ययन का उद्देश्य : -

1. चयनित वर्ष 2018-19 से 2022-23 के लिए बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंकों की ई-बैंकिंग सेवाओं का आकलन करना।
2. बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंकों द्वारा दी जाने वाली ई- बैंकिंग सेवाओं का अध्ययन करना।
3. बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंकों द्वारा दी गई ई-बैंकिंग सेवाओं की तुलना करना।

चयनित बैंकों की रूपरेखा :

बैंक ऑफ़ बड़ोदा :

बैंक ऑफ़ बड़ोदा, भारत का सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक है। यह भारतीय स्टेट बैंक के बाद भारत का तीसरा सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक है। इसकी स्थापना 1908 में हुई थी और इसका मुख्यालय वडोदरा, गुजरात में है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा की कुल परिसंपत्ति 1,785 अरब रुपए हैं और लगभग 9000 से अधिक शाखाएं हैं तथा 10,000 से अधिक ATM के साथ बैंक ऑफ़ बड़ौदा की भारत में मजबूत स्थिति है।

एचडीएफसी बैंक :

एचडीएफसी, भारत का एक प्रमुख बैंक है। इसकी स्थापना AUGUST 1994 में मुंबई में की गई। एचडीएफसी बैंक ने जनवरी 1995 में एक अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक के रूप में कार्य शुरू किया। एचडीएफसी बैंक, संपत्ति के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का बैंक है और अप्रैल 2021 तक बाजार पूंजीकरण के हिसाब से दुनिया का दसवां सबसे बड़ा बैंक है। 31 मार्च 2023 तक, एचडीएफसी बैंक ने अपनी पहुंच में काफी विस्तार किया हैं। इसके पास 3,203 शहरों में 7,821 शाखाओं का व्यापक वितरण नेटवर्क भी है।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत अध्ययन में सार्वजनिक बैंक (बैंक ऑफ़ बड़ोदा) और निजी बैंक (एचडीएफसी) की सेवाओं की तुलना करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में 2018- 19 से 2022 – 2023 की अवधि शामिल की गई है। वर्तमान अध्ययन पद्धति वर्णनात्मक है। प्रस्तुत

आंकड़े भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक की वार्षिक रिपोर्ट, पत्रिकाओं, लेख, समाचार-पत्र, वेबसाइट आदि से लिए गए हैं।

समको का विश्लेषण:-

1). RTGS (Real Time Gross Settlement):

यह एक भुगतान प्रणाली है जो आपके बैंक खाते से लाभार्थी के खाते में तत्काल और सुरक्षित निधि हस्तांतरण को सक्षम बनाती है। यह अपने वास्तविक समय प्रसंस्करण और लेन-देन को बैंचो में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से संसाधित करने की प्रणाली के कारण उच्च मूल्य लेन-देन के लिए व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। RTGS भुगतान पद्धति का उपयोग डेबिट और क्रेडिट कार्ड भुगतान के लिए भी किया जा सकता है। आरटीजीएस लेन-देन करने के लिए ऑनलाइन प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है।

Table: 1 RTGS (Inward and Outward- March 2023)

Banks	Inwards		Outwards	
	Volume	Value (in Rs. Crore)	Volume	Value (in Rs. Crore)
BANK OF BARODA	954617	326685	1163016	327484
HDFC	4789673	2874422	4014393	3115948

सारणी संख्या 1 में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक की मार्च 2023 की RTGS द्वारा लेन-देन की मात्रा और मूल्य को दर्शाया गया है। बैंक ऑफ़ बड़ोदा द्वारा RTGS की मात्रा और मूल्य एचडीएफसी बैंक से काफी कम है। अत: कहा जा सकता है कि एचडीएफसी बैंक की स्थिति RTGS भुगतान प्रणाली की दृष्टि से बैंक ऑफ़ बड़ोदा से श्रेष्ठ है ।

2). EPS (Electronic Payment System): -

इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली (ई-भुगतान), इलेक्ट्रॉनिक या ऑनलाइन माध्यमों से किया जाने वाला भुगतान का एक प्रकार है। ऑनलाइन भुगतान प्रणाली नगद या चेक भुगतान की आवश्यकता को समाप्त कर देती है। यह प्रणाली भुगतानकर्ता को किसी विशेष तिथि पर सीधे भुगतानकर्ता के खाते में एक निश्चित राशि जमा करने में सुविधा प्रदान करती है। EPS के अंतर्गत NEFT, RTGS और IMPS आदि के द्वारा भी इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर किया जा सकता हैं।

Table: 2- Volume of National Electronic FUND Transfer (NEFT)

Year/ Transaction	BOB		HDFC	
	No. of Transaction Volume		No. of Transaction Volume	
	Debit NEFT	Credit NEFT	Debit NEFT	Credit NEFT
2018 – 19	4413970	11086706	32921765	17652249
2019 - 20	5256949	14293401	34801599	35228285
2020 - 21	6668126	19569214	43053502	29906668
2021 - 22	7812002	30887951	50379635	38300887

2022 - 23	8328073	40473722	52425172	46921595

सारणी संख्या 2 में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक के राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर की मात्रा को दर्शाया गया है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा के NEFT डेबिट, HDFC बैंक के NEFT डेबिट की अपेक्षा अधिक है तथा HDFC बैंक के NEFT क्रेडिट, बैंक ऑफ़ बड़ोदा के NEFT क्रेडिट की अपेक्षा अधिक है। अत: उपयुक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि बैंक ऑफ़ बड़ोदा तथा एचडीएफसी बैंक दोनों में डेबिट NEFT और क्रेडिट NEFT में लगातार वृद्धि जारी है।

3). ATM (Automated Teller Machine):

एटीएम एक इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग आउटलेट है, जो ग्राहकों को शाखा प्रतिनिधि या टेलर की सहायता के बिना बुनियादी लेन-देन पूरा करने की अनुमति देता है। एटीएम को स्वचालित बैंक मशीन (ABM), कैश प्वाइंट या कैश मशीन के नाम से भी जाना जाता है।

Table: 3. Automated Teller Machines (ATMs)

Year/ Category	BOB		HDFC	
	On-site	Off-site	On-site	Off-site
2018 – 19	6329	3243	6036	7124
2019 - 20	9354	3839	6268	7793
2020 - 21	8663	2970	6552	8227
2021 - 22	8757	2730	8703	9427
2022 - 23	8786	2615	10301	9426

सारणी संख्या 3 में 2018- 19 से 2022-23 की अवधि के लिए बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंकों के ऑनसाइट और ऑफसाइट एटीएम को दर्शाया गया है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा में ऑन साइट एटीएम की संख्या अधिक है जबकि एचडीएफसी बैंक में ऑफ साइट एटीएम की संख्या काफी अधिक है। वर्ष 2022-23 में एचडीएफसी बैंक में ऑनलाइन एटीएम की संख्या में काफी वृद्धि हुई है है। अत: ऑन साइट एटीएम वह है जो शाखा परिसर में स्थित होते हैं तथा ऑफसाइड एटीएम वह है जो शाखा परिसर से दूर स्थित होते हैं।

4). MOBILE BANKING:

मोबाइल बैंकिंग एक ऑनलाइन बैंकिंग सेवा है, जो बैंकों द्वारा अपने मौजूदा ग्राहकों को प्रदान की जाती है ताकि वह अपने बैंकिंग खाते तक पहुंच सके और जब भी उपयोगकर्ता इंटरनेट से जुड़े हो तो स्मार्टफोन और टैबलेट सहित मोबाइल डिवाइस का उपयोग करके असंख्य लेन-देन का कार्य कर सके।

Table: - 4. Mobile Banking Transactions

Year	BOB		HDFC	
	Volume (Actual)	Value (Thousand)	Volume (Actual)	Value (Thousand)
2018-19	9400600	78551095	60057314	525843745
2019-20	10951408	92357726	120519634	696795439
2020-21	159685073	410100224	253168512	1320861629

2021-22	287628548	665937868	476004070	2054232337
2022-23	507313460	1067135224	769231808	2782929210

सारणी संख्या 4 में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक के 2018-19 से 2022-23 की अवधि में मोबाइल बैंकिंग लेन-देन को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक में 2018 से 2023 तक मोबाइल बैंकिंग लेन-देन में लगातार वृद्धि जारी है।

5). INTERNET BANKING:

इंटरनेट बैंकिंग जिसे ऑनलाइन बैंकिंग, ई-बैंकिंग या नेट बैंकिंग के नाम से भी जाना जाता है। बैंको और वित्तीय संस्थाओं द्वारा दी जाने वाले एक सुविधा है, जो ग्राहकों को इंटरनेट पर बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने की अनुमति प्रदान करता है। अतः ग्राहकों को किसी भी प्रकार की सेवा का लाभ उठाने के लिए अपने बैंक के शाखा कार्यालय में जाने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है।

Table:- 5 Internet Banking (March 2023)

Bank Group	Volume (Actuals)	Value (Thousands)
BANK OF BARODA	3935199	844122071
HDFC	60061234	5686292179

सारणी संख्या 5 में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक की मार्च 2023 तक इंटरनेट बैंकिंग द्वारा लेन-देन की मात्रा और मूल्य को दर्शाया गया है। प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर दर्शाया गया है कि एचडीएफसी बैंक के मात्रा और मूल्य बैंक ऑफ़ बड़ौदा की तुलना में काफी अधिक है।

6). ECS (Electronic Clearance Service):

ECS एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में फंड ट्रांसफर करने का एक इलेक्ट्रॉनिक तरीका है। इसका उपयोग लाभांश, ब्याज, वेतन, पेंशन आदि जैसे भुगतान करने के लिए संस्थाओं द्वारा किए गए योजना हस्तांतरण के लिए किया जाता है। ECS का उपयोग बिलो और अन्य शुल्कों का भुगतान करने के लिए भी किया जा सकता है जैसे टेलीफोन, बिजली, पानी का बिल आदि ।

A). ECS Credit: ECS Credit का उपयोग ग्राहक के खाते में एक ही डेबिट बढ़ाकर बड़ी संख्या में लाभार्थियों को क्रेडिट की अनुमति देने के लिए किया जाता है जैसे कि लाभांश, ब्याज या वेतन भुगतान ।

Table: 6. Credit Card (Number – Outstanding (as on month end)

Year	BOB	HDFC
2018-19	231277	12486918
2019-20	467879	14499647
2020-21	644537	14985844
2021-22	1103921	16536735
2022-23	1947283	17535910

सारणी संख्या 6 में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक के क्रेडिट कार्ड संख्या को दर्शाया गया है। दोनों ही बैंकों में क्रेडिट कार्ड संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। अतः बताया जा सकता है कि एचडीएफसी बैंक

की क्रेडिट संख्या बैंक ऑफ़ बड़ौदा की क्रेडिट संख्या से काफी अधिक है ।

B). ECS Debit:- ECS Debit का उपयोग बिजली बिल और टेलीफोन बिल जैसे उपयोगिता भुगतान जैसे मामलों में किसी विशेष संस्थान को एकल क्रेडिट देने के लिए उपभोक्ताओं या खाताधारको के कई खातों में डेबिट बढ़ाने के लिए किया जाता है ।

Table: 7. Debit Card (Number – Outstanding (as on month end)

Year	BOB	HDFC
2018-19	41940800	26997235
2019-20	54044741	32113096
2020-21	65399342	36695799
2021-22	74522207	43041155
2022-23	82585036	50744860

सारणी संख्या 7 में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंक के डेबिट कार्ड संख्या को दर्शाया गया है। दोनों ही बैंकों में डेबिट कार्ड संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। अतः बताया जा सकता है कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा के डेबिट कार्ड संख्या एचडीएफसी बैंक की डेबिट कार्ड संख्या से काफी अधिक है।

निष्कर्ष:

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में बैंकिंग क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। बैंकिंग क्षेत्र में प्रगति ने देश को एक नया आयाम प्रदान किया है। प्रस्तुत अध्ययन में बैंक ऑफ़ बड़ोदा और एचडीएफसी बैंकों की ई-बैंकिंग स्थितियो का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यद्यपि अध्ययन से स्पष्ट है कि कुछ क्षेत्रों में बैंक ऑफ़ बड़ोदा, एचडीएफसी बैंक से श्रेष्ठ है तो कुछ क्षेत्रों में एचडीएफसी बैंक ने अधिक प्रगति की है। अत: स्पष्ट है कि वर्तमान समय में ई.बैंकिंग ने देश की प्रगति में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। अत: कहा जा सकता है कि बैंकिंग प्रणाली वैश्विक वित्तीय वातावरण का एक अभिन्न अंग बन गई है।

संदर्भ सूची:

1. Chawla S.(2024), “Exploring The Potential of Online Banking: An Insight Into Innovations and Barriers In The Indian Context.” Educational Administration: Theory and Practice, 30(5), 991-998.
2. Dhananjay, B.(2015), “The Electronic Banking Revolution in India” Journal of Internet Banking and Commerce.
3. Gautam, L.(2014),,“E –Banking in India: Issues and Challenges” Scholars Journal of Economics, Business and Management , 1(2): 54 – 56.
4. Jamaluddin N.(2013), “E-Banking: Challenges and Opportunities in India” – Proceedings of 23rd international Business Research – Academic. Education.
5. Raj. K.B.(2023),” A Study on Awareness of E-Banking Services Among Rural Customers in India”, Journal of information Education and Research, 3(2).
6. Rao, M. N.(2015), , **“**Impact of Mobile Banking on its users and banking**”** ZENITH International Journal of Business Economics & Management Research , 5(1), 35 – 46.

7. Saraswati S.(2024), "A Study of E- Banking Services in Public Sector Banks in India", KINERJA 28(1),1-22.
8. RESERVE BANK OF INDIA REPORT
9. BANK OF BARODA ANNUAL REPORT.
10. HDFC BANK ANNUAL REPORT.